

ॐ नमोऽष्टावक्रसूत्राय। यथाचितं। पूर्वीकं विधिः॥ नवकर्म। गुप्तः
मैत्रेयः। देवुपि। कथं संपूजायाय। एकाविंशं धनकाव। समस्तं
देवपूजायाय। नृपूजायाय। विविधं। समस्तं कियं याय। पञ्चम
वत्सधनयाय। मध्याह्नं। गमसति। पूर्वसं। सायाहृतं। दक्षिणसं।
मय। पश्चिमसं। साधवि। उतयसं। साइइ। नययाडाव। सधनया

याधनातिथवदात्र सावायाग्मयस्वायलिप्रसिवायावमा
नद्रुयावबाहावयाकुंशविवात्रास्वसावासीदयथायसेत
याधनाधीमदानकत्वधाधीमसेचमद्युपदानकइत्ये
ष्वन्याथीदानकेअत्रमेधुलदानकविहन्ननयादावयः
रुगवावियउत्रयावयाधनायादावकावावावदा

नृपावतय। धनागिरुदसनायादने॥ ॥ धना। अत्र न। यक्रम
विविय। नृपाकान्। अत्र उवाच। सर्वपापविनाश। धे। यन्ना धेव
वियय। महाकायू। काना धे। देदिमयेक गता वै। कायवाक
विरु। अत्र धे। इति। धे। धनायच। महाकायू। काना धे। देदिः
मगाययेक वै। अत्र धे। नमो रते। सर्व धातु वि। धे। धे। महा

कात् माका नाथं देहि मंगल वयस्यै नै दुःखयया मोक्षा कविः
नायक यदुपावता सर्वपाप विनाशार्थं सुसिद्धसमातलि ॥
॥ ॥ श्रुति धनदा वयै कृणुत ॥ श्रुति धनया दातुं शिष्या तात वि २
या ॥ श्रुति धन तु कर्तुं यै कृणुत न्य को विवाजाय सत्तावकं कृणुत
॥ ॥ धना गुप्तं धनदानं विधिः ॥ वृद्ध धर्म संधि मधु

वदानं ॥ यागाय प्रज्ञा न्यास ॥ ईं आ ॥ अर्थ वे या य नाय वज्र पः
वीर्य मित्र साहा ॥ ईं आ ॥ अर्थ अथा हाय वज्र पः वीर्य मित्र साहाः
हा ॥ यत्न सीरव अमिता हाय अमोघ सिद्धि याय नि मा म किः
यदुनी ताया ॥ यै कृणुत य प्रज्ञा ॥ मुक्ति ॥ या वृद्ध न ही म नादि
मथानि धन सान विवृद्ध सरी ॥ वृद्ध वृद्ध म् ॥ वृद्ध नाथ म् ॥ रायः

ममदिदं गच्छ वत । सै ह्यनकया धि वज्रव लेय कइ इत्या
क न कश्चि न नाइ गदना पिमुद विम पिण काय । वं नै नमः ॥ ॥
धममै धुन । डें आ ४ आ र्य पु ह्या वा य मिता य वज्र पूर्वी पति युः ३
सादा ॥ डें आ आ र्य ग धु वा दा य वज्र पूर्वी पति यु सादा ॥ डें आ ४
आ र्य द स नु मि ४ वा य वज्र पूर्वी पति यु सादा ॥ डें आ आ र्य स

मा धि वा ज्ञा य वज्र पूर्वी पति यु सादा ॥ डें आ ४ आ र्य ली का वना ४
वा य वज्र पूर्वी पति यु सादा ॥ डें आ ४ आ र्य स धर्म यै धु वा का
य वज्र पूर्वी पति यु सादा ॥ डें आ ४ आ र्य ली लित विरु या य वज्र प
र्वी पति यु सादा ॥ डें आ ४ आ र्य स व र्क य रा सा ता य मा य वज्र
पूर्वी पति यु सादा ॥ डें आ ४ आ र्य त था गत मु च्छ का य वज्र प

षीपुतिचुसादा॥ ॥ वंशायवावपूजा॥ भुति॥ यासवस्तुग
यानय॥ ययसमभक्तविम॥ अवका नूयामाग्नस्तुतया
नगधित॥ कृती लोका र्थसम्यादिका सर्वका नमिदेवदनि
मूनयाति॥ यययसगता॥ तस्मै अवका वाधिसस्तुगधिः
नावधस्तुमागुनम॥ ॥ सैधमैधुन॥ आर्याववाकिग

ववायवउपूषीपुतिचुसादा॥ डै॥ आ॥ अ॥ यमतेयवउपूः
षीपुतिचुसादा॥ डै॥ आ॥ अ॥ यमगतामगतास्तुनयवउपूषीपु
तिचुसादा॥ डै॥ आ॥ अ॥ यमस्तुतदायवउपूषीपुतिचुसा
दा॥ डै॥ आ॥ अ॥ यमवउपूषीपुतिचुसादा॥ डै॥ आ॥
आ॥ यमस्तुतदायवउपूषीपुतिचुसादा॥ डै॥ आ॥ अ॥ यमः

सर्व निवचन विरुद्धि (व वरु पूर्ण प्रतिबुद्ध सादा ॥ ॐ आ ॥ ४५ ॥
र्या त्रिनि बरा यसादा ॥ ॐ आ ॥ ४५ ॥ र्या सव रु बरा यव रु पूर्ण
प्रतिबुद्ध सादा ॥ वै वा यदा य प्रजा ॥ तुमि ॥ वृ ध न मा मि धान नी ॥ १
वय पञ्च या वि मे न्या ल क म म क्ष स म न रु डै । रु द्रा धि वी
पय हि गो । धृ नी म रु द्या वी । विरु मि नै त्रि नि स व न रु म रु

न मा मि ॥ ॥ धना अ व या च क ॥ ॐ न म ४ ५ ॥ ३ धी म धा तु वा
ला भव य नु त स नू वि वृ धा र ग व नै । म मा क्सी वृ द्वा या न रु
था ॥ वृ द्वा सी व न सू ग गा ला का प्र नू व द म्य । सा य धि द वा न
रु स नू काना रु । अ धी प्र ति बु द्वा सादा ॥ वै वा यदा य प्रजा ॥ तु
मि ॥ वृ दि रु द्वा मि धी ना मा । या व न्ना र्व । वृ द्वा स न नै ग रु मि

द्विपदानामैव ॥ ॐ ॥ बुद्धिजन आरा र्यसक्त ॥ ॐ ना पय
य ॥ क्रिथव नामन ॥ तावति वनवद्वयपूनायी ॥ वृद्धसुभा
ययाय ॥ देव ॥ मनूरा ॥ असूच ॥ थनसमस्तुयी ॥ उरुमथः
धिष्ठ ॥ वृद्धसुसपनयाय ॥ ॥ अर्हमिथनामातावतिव ॥ धम
भाजनगच्छामि ॥ विनामानामैवयी ॥ ॐ ॥ क्रिथव नामन

वतिव नवद्वयपूनायी ॥ धमभाजयाय ॥ तवसि ॥ आनिदव
दकयी ॥ उरुम ॥ थथिष्ठ ॥ धर्मसुसपनयाय ॥ ॥ अर्हमिन्कः
नामायावताव ॥ सद्यसपनैगच्छामि ॥ नानाभीमयी ॥ ॐ ॥
क्रिनक्रिव नवद्वयपूनायी ॥ सद्यसुभाजयाय ॥ समस्तुसि
द्य ॥ गद्य ॥ गद्य ॥ नायायाकाया ॥ उरुम ॥ थथिष्ठ ॥ सद्यसुभा

जनयाय । थथ धर्क सिवा न वृत्ता यथाहा ॥ ॥ धृति धूनः
काव । भिषव तिष्ठा याय । मता का । तात्र या । सत्माननताः
य । समान विर । सकाननय । धृति धून काव । विसन्न नयाय
द व प्रता । धृति धून काव । कामा विप्रता । थनानि कश्चाः
रुपिन कश्चा । गन च कश्चाय कश्चा ॥ तादा या स । लीखन ४

यावन्नायायकं कुमायीपूजा न द्वा माय॥ वृत्तिसूचिकं मवि
धिरुका॥ समाया॥ २५॥ ॥ वाममृतवाममयशायदधि
स्यकु (वामदक निदिषी यस्मिन्नवगु यस्मिन्नवगु यवि
स्तु काय वामधने मृतमुनी लव धूम्या कृष्णया वाममय
रुग्मनः पर्यध्वतउव धूम्या वामाया गुरुकर्मदधि४॥

कवि लाया च गीता च । न दायात के नागनी । अथा वस सर्व व
साया । कवि काया नु वि (ठा) वत ॥ ॥ (गाम) कव ल ग्रा च
॥ वप म क ल (गाम) यी । कान स क व द या । द धि र्वै क्का नि य
॥ अ र्था से क व ली ग्रा च । वि न स के क् (गाम) की । (गाम) य दः
वि स या दि । क् (गाम) द के न मि (गाम) ॥ ॥ डि अ मा च य चि छुः

द्विष्टा धर्यसमन्तं न धिनि २४७ सत्त्वमदायं श्रद्धं धावरा
 यैश्च गवाक्ष्याय लभधनमैनु ॥ ॥ लभमय लोपा २५
 लभमय लोपा लायावक्ष्यमान साइइ लोपा २६ साध४
 मि लोपा २० साधन लोपा २७ वयया लीख लोपा २८ धि
 मि यैश्च गवाक्ष्याय रा गदाया ॥ २९ ॥ ॥ ॥

आश्विन सप्तमि

2643

ASHA ARCHIVES